बच्चे किनके सामने बैठे है। बुधी मे जरूर चलता होगा कि हम पतित पावन सर्व का सदगति दाता अपने बेहद के बाप के सामने बैठे है। भल ब्रह्मा के तन मे है तो भी याद उनको ही करना है। मनुष्य कोई सर्व की सदगति नही कर सकते है। मनुष्य को पतित पावन नही कहा जा सकता है। बच्चो को अपने को आत्मा समझना पडे। हम सभी आत्माओ का बाप वो है। वो बाप हमको स्वर्ग का मालिक बना रहे है। यह बच्चो को जानना चाहिये और खुशी भी होनी चाहिये। यह भी बच्चे जानते है हम नर्कवासी से स्वर्गवासी बन रहे है। बहुत सहज रस्ता मिल रहा है। सिर्फ याद करना है। और अपने मे दैवी गुण धारन करने है। अपनी ही जांच रखनी है। नारद का भी मिसाल है नां। यह सब मिसाल ज्ञान के सागर बाप ने ही दिये है। जो भी सन्यासी आद मिसाल देते है वो सब बाप के ही दिये हुये है। भक्ति मार्ग में सिर्फ कछुये को भ्रमरी कासर्प का सिर्फ मिसाल देते है परन्तु कुछ भी कर नही सकते है। बाप के दिये हुये दृष्टान्त भक्ति मार्ग मे फिर रिपीट करते है। भक्ति मार्ग है ही पास्टकाल। इस समय जो-2 प्रक्टीकल मे होता है उनका फिर गायन होता है। भल देवताओं का जन्म दिन अथवा भगवान का जन्मदिन मनाते है। परन्तु जानते कुछ भी नही है। अभी तुम बच्चे समझ गये हो। बाप से शिक्षा ले कर पतित पावन भी बन जाते हो। पतितो को पावन बनने का रास्ता बताते रहते हो। यह है तुम्हारी मुख्य रूहानी सर्विस। पहले-2 कोई को भी आत्मा का ज्ञान देना है। तुम आत्मा हो। आत्मा का भी किसीको पता नही है। एक छोटी सी बूंद से कितना बडा शरीर बनता है। जैसे इतने छोटे बीज से झाड़ कितना बडा निकलता है। आत्मा तो अविनाशी है। जब समय होता है आत्मा आकर शरीर मे प्रवेश करती है। तो अपने को बार-2 आत्मा ही समझना है। हम आत्मा का बाप परमपिता परमात्मा है। यह अक्षर ठीक रीती बुधी मे धारन करो। फिर यह भी तुम जानते हो कि वो ही परमपिता भी है। परमटीचर भी है। यह भी हर दम बच्चो को याद रहना चाहिये। यह भूलना नही चाहिये। तुम जानते हो कि अब वापस जाना है। विनाश सामने खड़ा है। सतयुग मे दैवी परिवार बहुत छोटा होता है। कलयुग मे तो कितने ढेर मनुष्य है। अनेक धर्म अनेक मतें हैं। सतयुग मे तो यह कुछ भी नही होता है। बच्चों को सारा दिन बुधी मे यही बातें आनी चाहिये। यह पढाई है नां। उस मे तो कितने किताब आद होते है। हर एक क्लास मे नये-2 किताब खरीदने पड़ते है। यहां पर तो कोई भी किताब वां शास्त्रों आद की बात नही है। इसमे तो एक ही बात एक ही पढाई है। यह चित्र आद भी छपवाये है तो बच्चो आद को समझाने लिये। बाकी यह कोई रहने नही है। जिनका राज्य होता है उनकी अपनी ही पढाई अपनी ही भाषा चलती है। यहां ब्रिटिश गवर्मेन्ट का राज्य था तो गज, वजन, आद दूसरे थे। अभी तो मीटर किलो0 आद क्या-2 कहते रीते है। प्रजा का प्रजा पर राज्य है तो सब कुछ बदलता जाता है। आगे स्टैम्प मे भी राजा रानी के बिना और कोई का फोटो नही डालते थे। आजकल तो देशभक्त जो होकर गये है उनके भी स्टैम्प बनाते रहते है। दिन प्रति दिन अपनी-2 स्टैम्पस बनाते जाते है। ~~तुम-किस-किस~~ धनी धोनी कोई एक तो है तो है नही। इन ल-न का राज्य होगा तो चित्र भी एक ही महाराजा महारानी का होगा। ऐसे नही कि जो पास्ट होकर गये है उन को लाखों वर्ष हुये तो मिट गये है नही। पुराने से पुराने राजा लोग जिन के चित्र भी बिकते है। कृष्ण का चित्र बहुत दिल से लगता है। क्योकि शिव बाबा के बाद है यह। सूक्ष्म वतन से तो तुम्हारा कनेक्शन ही नही है। यह सभी बाते तुम बच्चे धारन कर रहे हो औरों को रस्ता बताने लिये। यह है बिलकुल नई बात नई पढाई। तुमने ही यह सुनी थी और पद पाया था और कोई नही जानते है। तुमको राजयोग परमपिता परमात्मा सिखा रहे है। महाभारत की लडाई भी मशहूर है। क्या होता है सो तो आगे चल कर देखेंगे। कोई क्या कहते है कोई क्या कहते है। लिखते है कि स्टार गिरेगा तो 100 फुट समुन्द्र उछल जायेगा। फिर तो सब खण्ड ही डूब जायेंगे। दिन प्रति दिन मनुष्यों को टच होता जाता है। कहते भी हैं कि वर्ल्ड वार लग जाये

इसके पहले ही तुम बच्चों को अपनी पढाई से राजाई प्राप्त करनी है। बाकी असुरों और देवताओं की कोई लडाई नही हुई है। इस समय तुम ब्राह्मण सम्प्रदाय हो। जो ही फिर दैवी सम्प्रदाय बनते हो। तुम दैवी गुण धारन कर रहे हो। नम्बरवन दैवी गुण है पवित्रता का। तुम इस शरीर द्वारा कितने पाप करते आये हो। आत्मा को ही पापात्मा कहा जाता है। आत्मा इस शरीर द्वारा कितने पाप कर रही है। तो हेयर नो ईग्वल .. ... किसको ही कहा जाता है। आत्मा को। आत्मा ही कानो से सुनती है। बाप आत्मा को कहते है तुम बच्चे सुखधाम का मालिक कैसे बनते हो। अभी यह समझा है। यादादाशत आती है कि हम ही आदी सनातन देवी देवता धर्म वाले चक्र लगा कर आये है। अबफिर तुमको तो वो ही बनना है। कितनी अच्छी और मीठी-2 बाते है। जिससे तुम इतने ही मीठे बनते हो। तुम्हारी बुधी मे है कि हमने कैसे 84का पार्ट बजाया है। पहले-2 हम यह थे। यह कहानी है नां। बुधी मे आना चाहिये नां कि 5हजार वर्ष पहले हम सो देवी देवता थे। हमें आत्मा मूल वतन की रहने वाली हूं। व आगे तो यह जरा भी खयाल नही था कि हम आत्माओं का वो घर है। वहां से हम आते है पार्ट बजाने। सूर्य चन्द्रवंशी फिर वैश्य क्षुद्र वंशी बनते है। अभी तुम ब्रह्मा की सन्तान ब्राह्मण वंशी हो। तुम ईश्वरिय औलाद बने हो। ईश्वर बैठ तुमको शिक्षा देते है। वो सुप्रीम बाप टीचर गुरु भी है। हम उनकी ही मत से सभी मनुष्यों को श्रेष्ट बनाते है। मुक्ति जीवन मुक्ति दोनो ही श्रेष्ट है। हम अपने घर जावेंगे फिर पवित्र बन कर आकर राज्य करेंगे। यह चक्र है नां। इसको ही कहा जाता है स्वदर्शन चक्र। यह ज्ञान की बाते है। बाप कहते है तुम्हारा यह स्वदर्शन चक्र खडा नही रहना चाहिये। फिराते ही रहने से विकर्म विनाश हो जावेंगे। तुम इन रावण पर जीत पालेंगे। पाप मिट जावेंगे। अब याद आई है याद करने लिये। ऐसे नही कि माला बैठ कर फेरनी है। आत्मा में ही अन्दर मे ज्ञान है। जो तुम बच्चो को फिर भाई-बहनो को समझाया है। बच्चे भी मददगार तो बनेंगे ही नां। तुम बच्चों को हि स्वदर्शन चक्रधारी बनाता हूं। यह ज्ञान मेरे मे ही है। इसलिय ही मुझे ज्ञानसागर मनुष्य सृष्टी का बीज रूप कहते है। उनको बागबान कहा जाता है। मनुष्य सृष्टी के नये झाड का बीज बोते है। देवी देवता धर्म का बीज शिव बाबा ने ही लगाया है। अभी तुम देवी देवता धर्म का बन रहे हो। यह सारा दिन याद करते फिराते रहो तो भी तुम्हारा बहुत कल्याण है। दैवी गुण भी धारन करने है। पवित्र भी जरूर बनना है। स्त्री पुरुष दोनो इकटे रहते पवित्र बनते हो। ऐसा धर्म तो होता नही है। निवृती मार्गवाले है तो वो तो सिर्फ पुरुष हि पवित्र बनते है। कहते है कि स्त्री पुरुष दोनो इकठे पवित्र रहे सके यह मुश्किल है। अरे सतयुग मे थे नां। लक्ष्मी नारायण की महिमा महिमा भी गाते है। अभी तुम बच्चे जानते हो बाबा हमको शुद्र से ब्राह्मण बना कर फिर देवता बनाते है। फिर हम पूज्य से पुजारी बनेंगे। वाम मार्ग मे जावेंगे तो शिव का मन्दिर बना कर पुजा करेंगे। तुम बच्चो को अपने 84जन्मों का ज्ञान है। बाप ही कहते है कि तुम अपने जन्मों को नही जानते हो मै ही बताता हूं। यूं और कोई मनुष्य कह नही सकते है। 84का चक्र गाते भी है परन्तु वो फिर 84लाख कह देते है। बात ही उड जाती है। तुमको अब बाप स्वदर्शन चक्रधारी बनाते है। तुम आत्मा पवित्र बन रही हो शरीर तो यहां पर पवित्र बन नही सकता है। आत्मा पवित्र बन जाती है तो फिर अपवित्र शरीर को छोडना पड़ता है। सब आत्माओं को पवित्र होकर जाना है। प्योअर दुनियां अस्थापन हो रही है। बाकी सब स्वीट होम मे चले जावेंगे। यही याद रखना चाहिये। अब हम वापस जाते है। अभी बाप और घर को याद करना है। घर मे बाप को याद करो। भल तुम जानते हो कि बाबा इसमे बैठे हुये हमको सुनाए रहे हैं। परन्तु बुधी मे परमधाम स्वीट होम मे लौटनी चाहिये। टीचर घर छोड कर तुमको पढाने आते है। पढा कर फिर बहुत दूर चले जाते है। सैकिंड मे कहीं पर भी जा सकते है। आत्मा कितनी छोटी बिन्दी है। वण्डर खाना चाहिये। आत्मा का भी बाप ने ज्ञान दिया है। यह भी तुम्ही बच्चे जानते हो कि स्वर्ग

स्वर्ग मे कोई गन्दी चीज होती नही है पीसेस ही की हाथ पांव अथवप. कपड़े आद मैले होते हो। देवताओं की कितनी सुन्दर पहरावश है। कितने फर्स्ट क्लास कपड़े होगें धोने की भी दरकार नही है। इनको देख कर कितनी खुशी होनी चाहिये। आत्मा जानती है कि भविष्य मे 2।जन्मो तक हम यह बनेंगें। बस। देखते ही रहना चाहिये। यह चित्र(ल-न) सबके पास होना चाहिये। इसमे बहुत खुशी चाहिये। हमको बाबा यह बताते है। ऐसे बाबा के ऐसे बच्चे फिर रोते है। हमको कोई फिकर थोडेई होना चाहिये। देवताओं के मन्दिर मे जाकर महिमा करते है सर्वगुण सम्पन्न..अचतम केवम.... कितने नाम बोलते जाते है। यह सब शास्त्रो मे ही लिखा हुआ जो कि याद करते है। शास्त्रो मे किसने लिखा? व्यास नें। यहां कोई नये-2 भी बनाते रहते है। ग्रन्थ आगे तो बहुत छोटा था हाथ का लिखा हुआ था।अभी तो कितना बडा बना दिया है। जरूर ऐडीशन किया हुआ होगा! अब गुरू नानक क्या आकर ज्ञान देंगें। वो तो आते ही है धर्म की स्थापना करने। ज्ञान देने वाला तो एक ही है। गुरू नानक का ग्रन्थ पढने से क्या होगा? कुछ भी नही। सद्गति हो नही सकती है।तो फिर उनको गुरू भी नही कहा जावे। क्राईस्ट भी आते ही है सिर्फ धर्म स्थापन करने लिये। जब सब आ जाते है तो फिर वापस जावेंगें। घर भेजने वाला कौन? क्या क्राईस्ट है? नही। वो तो तमोप्रधान अवस्था मे है। सतोप्रधान सतो रजो तमो। इस समय सभी तमोप्रधान है। सबका विनाश होना है। इस समय सबी की जड़जड़ी भूत अवस्था है। पुनर्जन्म लेते-2 सब धर्म वाले इस समय तमोप्रधान आकर बने है। फिर जरूर चक्र फिरना चाहिये।पहले नया धर्म चाहिये जो कि सतयुग में था। बाप ही आकर आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करते है। फिर विनाश भी होना है। स्थापना विनाश फिर पालना। सतयुग मे तो एक ही धर्म होगा। यह यादादाश्त आती है नां। सारा चक्र याद करना है।अभी हम 84का चक्र पुरा करके वापस घर जाते है। तुम बोलते चालते स्वदर्शनचक्रधारी हो।वो फिर कहते है कि कृष्ण को स्वदर्शनचक्र था। उनसे ही सबको मारा। अकासुर बकासुर आद केचित्र भी दिखाये है। परन्तु ऐसी तो कोई बात ही नही है। स्वदर्शनचक्र से पाप कटते है। आसुरी पना खत्म होता है। देवताओं और असुरो की लडाई तो हो नही सकती है। असुर है कलयुग मे देवताये है सतयुग में। बीच मे है संगम युग2 शास्त्र है हि सभी भक्ति मार्ग के। ज्ञान का नाम निशान नही है। ज्ञान सागर एक ही बाप है सबके लिये। सिवाय बाप के कोई भी आत्मा प्योअर बनकर वापस जा ही नही सकती है। पार्ट जरूर बजाना है। तो अब अपने 84 के चक्र को भी याद करना है। अभी सतयुगी नये जन्म मे जाते है। ऐसा जन्म फिर कभी नही मिलता है। शिव बाबा फिर ब्रह्मा बाबा लौकिक पारलौकिक और फिर यह है आलौकिक बाबा। इस समय की ही बात है। इनको आलौकिक कहा जाता है। तुम बच्चे इस शिव बाबा को ही याद करतेहो ब्रह्मा को नही। भल ब्रह्मा की मन्दिर मे जाकर पुजा करते है। वो भी तब पूजते है जब कि सूक्ष्म में अव्यक्त मूर्त है। यह शरीरधारी पूजा के लायक नही है। यह तो मनुष्य है नां। मनुष्य की पुजा नही होती है। ब्रह्मा को दाढी मूंछ दिखाते है। त्रिमूर्ती के चित्र मे कब भी तीनो को नही दिखाते है। कब फिर ब्रह्मा को दाढी दिखाते है कि पता पडे यह कहां का है। देवताओं को दाढी होती नही है। यह सब बाते बच्चो को समझा दी है। तुम्हारा नाम बाला है। इस लिये तुम्हारा मन्दिर भी बना हुआ है। सोमनाथ का मन्दिर कितना उंच ते उंच है। सोमरस पिलाया फिर क्या हुआ। वो फिर यह दिलवाला मन्दिर देखो। हुबहु मन्दिर हूबहू यादगार का बना हुआ है। नीचे तुम तपस्या कर रेह हो। ऊपर मे स्वर्ग है। मनुष्य समझते है कि स्वर्ग कहीं मे ऊपर मे है।मन्दिर मे भी नीचे स्वर्ग कैसे बनावे। तो उपर छत मे बना दिया है। बनाने वाले कोई समझते तो नही है। बडे-2 करोडपति भी है। उनकी अहमदाबाद मे बडी कोठी यां है। उनको पकडना चाहिये। दिलवाला मन्दिर पर जो तुम्हारउकिताब बना हुआ है वो उनको देना चाहिये।बोलो आकर समझो हम आप को दिलवाला मन्दिर की पुरी समझानी देंगें।ओम्